करना उचित होता है।

अंकुरण हेतु उपयुक्त माध्यम – अंकुरण हेतु रेत+मिटटी (2:1) के अनुपात में लेकर बीज की बुआई की जानी चाहिए।

बुआई का समय – मार्च से अप्रैल माह के मध्य किया जाना उपयुक्त है।

बुआई हेतु उपयुक्त विधि – सीधे बीज की बुआई जर्मिनेशन ट्रे अथवा क्यारी में 5 से 8 सेमी. रेत की परत बिछाकर अथवा 1 वर्ष पुराने बीजाकुर से रूट–शूट काटकर किया जाता है। रूट की लम्बाई लगभग 25 सेमी. एवं शूट की लम्बाई 3 से 4 सेमी. तक रखना उपयुक्त होता है ।

रखरखाव/रोकथाम – प्रारंभ में पौधे अधिक कोमल होने के कारण उन्हें तेज घूप एवं गर्म हवा से बचाना आवश्यक होता है रोपण क्षेत्र में मवेशियों से सुरक्षा के लिए तार या काटों की बागड़ लगाना रोपण के पहले वर्ष में कम से कम दो बार निदाई एवं गुडाई करने से पौधें में अच्छी बढ़त होती है। पौधों की जड़ों को दीमक एवं अन्य बीमारियों से बचाने कीटनाशक दवा जैसे वॉविस्टीन का 1% सान्द्रता के धोल का छिड़काव करना चाहिए।

उपयोगिता – इमारती लकड़ी के रूप में फर्नीचर आदि बनानें के कार्य में प्रयोग होता है। रसायनों के प्रति प्रतिरोधक क्षमता होने के कारण इसकी लकड़ी से बने सामान का उपयोग रसायनिक औद्योगिक प्रयोगशाला फर्नीचर आदि में किया जाता है। लकड़ी के बुरादे का प्रयोग चिप बोर्ड, फाईबर बोर्ड, प्लास्टिक बोर्ड में किया जाता है एवं इसकी लकड़ी से विभिन्न श्रेणी के प्लाईबुड तैयार किए जाते है। इसकी लकड़ी से आसवित तेल का प्रयोग एक्जिमा एवं बीज से प्राप्त तेल का प्रयोग एस्केबिस तथा बालों की लम्बाई बढ़ाने में किया जाता है। इसके फूल ब्रोंकाईटिस एवं यूरेनरी डिस्सचार्जेस हेतु तैयार की गई औषधी में प्रयोग किए जाते है। जड़ की छाल दरियों की रंगाई में काम आती है। इसकी पत्तियों में 6 प्रतिशत टेनिन एवं एक प्रकार की डाई पाई जाती है जो कि कास्मेटिक उत्पाद में उपयोग की जाती है।

अतः सम्पूर्ण वृक्ष व्यवसायिक एवं औषधि आदि समस्त प्रकार में उपयोगी है एवं इसके वृक्षारोपण से अत्याधिक लाभ कमाया जा सकता है ।

सम्पर्क

डॉ. अर्चना शर्मा

वैज्ञानिक

बीज शाखा

राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर (म.प्र.)

0761-2666529, 2665540

मूल्य रु. 10/-

सागौन

(टेक्टोना ग्रेंडिस)

(सागौन वृक्ष)

(परिपक्व फल)

बीज प्रभाग

राज्य वन अनुसंधान संस्थान

पोली पाथर, जबलपुर (म. प्र.)

प्रजाति का नाम – सागौन

वानस्पतिक नाम – टेक्टोना ग्रेन्डिस

प्रस्तावना – यह वरबनेसी कुल का वृक्ष है पूरे भारत वर्ष में विभिन्न क्षेत्रों में उत्तम श्रेणी के सागौन वृक्ष पाए जातें है। मध्यप्रदेश में वर्षा एवं तापमान के आधार पर सागौन के वनों को चार भागों में बाटा गया हैं – 1 आर्द्र सागोन वन (Moist teak forest) 2 किंचित आर्द्र सागौन वन (Semi moist teak forest) 3 शुष्क सागौन वन (Dry teak forest) 4 अति शुष्क सागौन वन (Very dry teak forest) । इस वृक्ष की ऊंचॉई लगभग 15 से 30 मीटर तक होती है। वर्मा में इसके वृक्ष 60 मीटर एवं इससे भी ऊंचे पाए जाते है। सागौन के लिए गर्म उष्ण एवं हल्का आर्द्र मौसम उपयुक्त होता है। इसकी पत्तियॉ विलोमी चौड़ी, शंकु की आकार की एवं खुरदरी करीब 30 से 40 सेमी. लम्बी, 15 से 30 सेमी. चौड़ी होती है। सागौन में पतझड़ नवम्बर से फरवरी के बीच होता है एवं नई पत्तियॉ अप्रैल से जून के मध्य आती है। इसकी लकड़ी का उपयोग उच्च गुणवत्ता वाली ईमारती लकड़ी के रूप में होता है। इस वृक्ष को पूरी तरह विकसित होने में 50 से 70 वर्ष का समय लगता हैं इसका रोपण बीज एवं रूट–शूट से भी किया जाता है । रूट–शुट से पौधे तैयार करने के लिए सागौन के 1 से 1½ वर्ष के पौधों का उपयोग किया जाता है। इसके लिए इन्हें जड़ से उखाड़ा जाता है। जिससे 24 सेमी. जड़ और छोड़ा सा तने का भाग अलग से काट लिया जाता हैं तत्पश्चात् रोपण क्षेत्र में सब्बल से छेद कर रोपित किया जात है। यह अत्यतः लोकप्रिय प्रजाति है।

प्राप्ति स्थान – लगभग संम्पूर्ण मध्यप्रदेश मे पाया जाता है।

मृदा का प्रकार – रेतीली, कछारी, काली कपासी, चिकनी लेटराइट मृदा में इसकी बढ़त अच्छी देखी गई है।

बीज चक – इसमें बीज उत्पादन क्षमता प्रतिवर्ष देखी गई है परंतु तीसरे वर्ष में अच्छी उत्पादन क्षमता एवं उच्च गुणवत्ता के बीज प्राप्त होते है।

पुष्पन का समय – जुलाई से अगस्त में इसमें फूल आना शुरू होता है तथा सितम्बर के अंत तक यह अपनी चरम अवस्था में आ जाता है।

फलन का समय – अक्टूबर से जनवरी तक फलन होता है। तत्पश्चात् फरवरी मार्च में परिपक्वता की श्रेणी में आता है।

एकत्रीकरण समय – फरवरी से मार्च के मध्य बीज परिपक्व होने के कारण इसका एकत्रीकरण फरवरी के अंत में अथवा मार्च के महिनें में किया जाना उपयुक्त होता है।

प्रतिकिलो बीजों की संख्या – 1 किलोग्राम में लगभग 2400 से 2800 तक बीज होते है।

जीवन क्षमता अवधि – 3 वर्ष तक होती है।

अंकुरण प्रतिशत – बीज में 30 से 40 प्रतिशत तक अंकुरण पाया जाता है।

सामान्य भंडारण की स्थिति में –

प्रथम वर्ष में – 20 – 25 प्रतिशत

द्वितीय वर्ष में– 35 से 40 प्रतिशत

तृतीय वर्ष में – 25 से 30 प्रतिशत

तृतीय वर्ष पश्चात् – 15 प्रतिशत से कम

पौध प्रतिशत – अंकुरण पश्चात् पौध मृत प्रतिशत 3 से 5 प्रतिशत होने के कारण इसकी पौध प्रतिशत 30 से 35 प्रतिशत प्राप्त होता है।

उपयुक्त भंडारण – कमरे के तापमान पर गनी बेग में रखना श्रेष्ठकर होता है। इसके लिए किसी विशेष भंडारण की आवश्यकता नहीं होती।

बुआई पूर्व उपचारण – बीज सामान्यतः मार्च से अप्रैल के मध्य बोए जाते है। सामान्यतः बीज में अंकुरण काफी कम (15 से 20 प्रतिशत) होता है। जिसके लिए कुछ प्रारंभिक उपचार की आवश्कता होती है जो बीज के काष्ठी अंतःभित्ती अथवा मध्य भित्ती में पाए जाने वाले कुछ रासायनिक अवरोधक को खत्म कर अंकुरण हेतु सुगमता प्रदान करते है। अतः प्राथमिक उपचार के लिए बुआई पूर्व बीज को 5 प्रतिशत ब्लीचिंग पाउडर के घोल में 3 घंटे तक डुबोने के पश्चात गनी बेग पर रगड़कर साफ पानी से धोकर उपचारित करने के पश्चात् बुआई करना अथवा 6 सप्ताह तक गडढे में डालकर गोबर एवं सड़ी गली पत्तियों के साथ ढाक कर 3 से 4 दिन के अंतर पर पानी का छिड़काव करने के पश्चात गनी बेग पर रगड़कर साफ पानी से धोकर बुआई